स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा, खण्ड–तीन

नाटक का विकास

– डॉ. मुन्ना साह

प्राक् वैदिक कालीन लोग उत्सव मनाने या साहसिक कार्य दिखाने के लिए एक स्थान पर एकत्र होकर नृत्य, अभिनय द्वारा मनोरंजन करते थे। वहाँ पर गान–नृत्य के अलावा विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार की सभाओं को समज्ज कहा जाता था।

पूराने स्वांगों की विशेषताएँ संस्कृत नाटकों में समाहित हो गईं। सूत्रधार और नटी के आपसी संवाद, विभिन्न भाषाओं और बोलियों का प्रयोग, गायन, नृत्य की बहुलता, सूत्रधार और विदूषक सभी स्वांगों से ही आए हैं।

अभिनेताओं की अंग रचना, अलंकरण, अंग संचालन, आंगिक अभिनय आदि सभी लोक नाटकों से साहित्यिक नाटकों में लिए गए हैं। प्रहसन में तो स्पष्ट रूप से धोखेबाजी, बेईमानी, चालबाजी के चरित्र प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें झगड़ा, विवाद, फूट, धोखाधड़ी, चालबाजी, मारपीट आदि क्रियाओं का विशेष महत्व होता है। लोक नाट्य के लिए ये अनुकूल विशेषताएँ हैं। इसी प्रकार हल्लीश, मणिक, सट्टक, शिल्पक आदि सभी नाट्य भेदों को लोक नाट्य और संगीतों से ग्रहण कर, बाद में शास्त्रीय नियमों से आबद्ध कर दिया गया। नट स्त्री का भी अभिनय करते थे। डार्विन ने ऑस्ट्रेलिया की एक ऐसी आदिम नृत्य–मण्डली की चर्चा की है, जो रात्रि में अग्नि के चारों तरफ नृत्य करती थीं तथा स्त्री और बच्चे पालती मारकर बैठे हुए नृत्य को देखते थे। अनुकरणात्मक प्रवृत्तियाँ नाटकों की मूल रही हैं। नकलची, हसौड़, नाटक आदि इसी अनुकरण प्रवृत्ति की देन हैं।

साहित्यिक नाटक के संबंध में निकॉल ने कहा है कि "कॉमदी का प्रारंभ डायोनाइसिआक उत्सव से ई. पू. 486 में हुआ। लेकिन इससे भी अनेक दशकों पूर्व कॉमदी जनमानस के मनोरंजन और अनुष्ठानों के बीच से निकलती हुई आगे बढती रही। इस नाटक का मूल एटिक कोमास था, जो उस काल का सर्वप्रचलित अनुष्ठान था, जिसमें मौज उड़ाने वाली मण्डलियाँ शोभा यात्रा का आयोजन करती

थीं तथा डायोनिसस के सम्मान में गीत गाती थीं। यही कोमास कामदी शब्द का मूल है। अधिकांश कोमास मण्डलियाँ चेहरे लगाती थीं और पशु–पक्षियों की खाल ओढ़ कर अभिनय करती थी। पशु पक्षियों में वे चिड़िया, घोड़ा, मेंढ़क आदि बनती थी। इस प्रकार ये नाटक आदिम आदमी की कोख से पैदा हुए और धीरे–धीरे साहित्यिक कॉमदी बन गए।"[1](भारतीय रंगमंच सिद्धांत और स्वरूप, पृ.2–3)

ऋग्वेद में नट् धातु का प्रयोग दो–तीन स्थानों पर हुआ है, जिनका संबंध प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से अभिनय से ही है।

———————————————————— ••• ————————————————————